शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण सृजनात्मकता पर आत्म प्रत्यय, समावेशीय अभिवृत्ति एवं संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन

पी-एच.डी. (शिक्षा शास्त्र)

उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु

प्रस्तावित शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

शोधार्थी

मनोज कुमार

शोध निर्देशक

प्रोफेसर ए० के० कुलश्रेष्ठ

डिपार्टमेंट ऑफ पेडागॉजिकल साइंसेज, शिक्षा-संकाय

दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)

दयालबाग, आगरा – 282005

2021

प्रस्तावना :

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य समाज की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं के अनुरूप बालक के व्यवहार को परिमार्जित करना है व्यवहार के विभिन्न अवयवों मे अभिवृत्ति अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। किसी वस्तु, व्यक्ति अथवा विचार के प्रति व्यक्ति किस प्रकार का व्यवहार करेगा यह उस व्यक्ति की उनके प्रति बनी अभिवृत्ति पर निर्भर करता है व्यवहार ही नहीं, व्यक्ति का सम्पूर्ण व्यक्तित्व भी उसकी अभिवृत्तियों के अनुकूल ही निर्मित होता है, जो कुछ भी व्यक्ति सीखता है और आदतों तथा रूचि आदि को ग्रहण करता है वह सभी उसकी अभिवृत्तियों द्वारा प्रभावित होता है। अतः एक अध्यापक को अभिवृत्ति के अर्थ एवं प्रकृति उनके निर्माण और विकास सम्बन्धी तथ्य और उनकी मापन विधाओं से अच्छी तरह परिचित होना आवश्यक है, साथ ही शिक्षण में नवाचारों व नवीन शिक्षण विधियों के द्वारा शिक्षण को प्रभावी बनाने का कार्य शिक्षक कर सकते है, क्योकि प्रत्येक शिक्षक में शिक्षण के प्रति सृजनात्मक चिंतन होता है जो कि शिक्षण कौशलों पर सार्थक प्रभाव डालता है इन सभी का ही परिणाम शिक्षण में सृजनात्मकता है, शिक्षण व्यवसाय में एक शिक्षक की सफलता एवं असफलता उसकी शिक्षण योग्यता, शिक्षण कुशलता, शिक्षण कौशल, शिक्षण अभिवृत्ति एवं शिक्षण सृजनात्मकता पर निर्भर करती है।

भारत संस्कृति एवं विभिन्न कलाओं का देश है भारतीय शिक्षा में संस्कृति एवं कलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है वर्तमान समय में कला, विज्ञान व तकनीकी पर आधारित शिक्षा ही विश्व की एक मात्र क्रान्तिकारी साधन है, जिससे लोगों के कल्याण व समृद्धि को निर्धारित किया जा सकें। शिक्षा में मुख्य रूप से ये क्रियाऐं निहित है प्रथम शिक्षण एवं द्वितीय अधिगम, मनोवैज्ञानिक अधिगम को केन्द्र बिन्दु मानते है परन्तु वर्तमान में शिक्षाविदों ने शिक्षण को ही केन्द्र बिन्दु माना है उनका तर्क है कि, प्रभावी शिक्षण, अधिगम को प्रभावी बनाता है।

शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता पर बल देते हुए, समय–समय पर विभिन्न आयोग व समिति के द्वारा सुझाव दिऐ गये। शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों के स्व–अधिगम व स्वतंत्र चिंतन की क्षमता का विकास करने के लिए यशपाल समिति (1992), ने शिक्षा की बदलती जरूरतों के अनुसार शिक्षक–प्रशिक्षण–कार्यक्रम को प्रासंगिक एवं व्यावहारिक बनाने पर मुख्य जोर दिया। समस्त शिक्षण व्यवस्था की प्रगति छात्राध्यापकों की प्रशिक्षण गुणवत्ता पर निर्भर करती है। शिक्षक प्रशिक्षण की दयनीय एवं दुर्बल स्थिति से प्रत्येक

व्यक्ति प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से परिचित है जिसे सर्वोच्च न्यायालय द्वारा गठित जस्टिस वर्मा आयोग (2012), ने अपनी रिपोर्ट में वैधानिक रूप से प्रमाणित किया कि अध्यापक प्रशिक्षण में ज्ञान के कुछेक अंशों का इस्तेमाल पारस्परिक रूप से किया जाता है। भावी अध्यापकों के प्रशिक्षण में सुधार कर उसे सुचारू बनाने के लिये एन.सी.एफ.टी.ई. रेगुलेशन (2014) के अलावा आर.टी.ई. एक्ट (2009) में भी शिक्षण–सक्षमता की जरूरतों पर बल दिया गया है। एन.सी.एफ. (2005) का एक सुझाव है शिक्षण एवं अधिगम को कला समेकित अधिगम के द्वारा कराया जाये, ताकि शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाया जाये एवं शिक्षण को प्रभावकारी बनाया जा सके। वर्तमान अध्यापक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के पुर्नगठन से नवीन प्रशिक्षण कार्यक्रम में छात्राध्यापकों को विद्यालयी अनुभवों तथा बालकों की संवेगात्मक जरूरतों का पाठ्यचर्या के घटकों पर पड़ने वाले प्रभाव को समझते हुए, शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया की परिस्थितियों का अवलोकन करना है, एवं भावी अध्यापकों की शिक्षण–सक्षमता के उन्नयन के लिए उनको शिक्षा में शिक्षण सृजनात्मकता जैसे शैक्षिक नवाचारों के प्रति जागरूक करना है।

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रत्यक्ष एवं परोक्ष प्रभाव व्यक्ति के अनुभवों को परिष्कृत एवं परिमार्जित करने में सहायक है प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रशिक्षणार्थियों के व्यावसायिक कुशलता के साथ–साथ व्यावहारिक रूप से भी व्यक्ति को भविष्य की व्यावसायिक समस्याओं चुनौतियों के समाधान के लिए भी तैयार करता है प्रशिक्षण कार्यक्रम में ग्रहण किए गए अनुभवों के माध्यम से शिक्षक प्रशिक्षणार्थी एक कुशल शिक्षक बनने की ओर आगे बढ़ता है, तथा साथ ही नवीन शैक्षिक कौशलों को ग्रहण करता है जिसका प्रयोग वह आने वाले भविष्य में करता है इस कार्यक्रम से शिक्षक प्रशिक्षणार्थी अपने अंदर कई प्रकार के परिवर्तन महसूस करता है जैसे आत्म प्रत्यय, समावेशीय अभिवृत्ति, संवेगात्मक बुद्धि और शिक्षण सृजनात्मकता जिनके द्वारा उसके व्यवहार का परिमार्जन होता है जो उसे शैक्षिक व्यवसाय में कुशलता प्राप्त होती है जो उसे आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करती है।

शिक्षक उत्कृष्टता का एक अहम पहलू **शिक्षण सृजनात्मकता** है, **ड्रैवडाहल (2009).** के अनुसार, सृजनात्मकता व्यक्ति की वह योग्यता है जिसके द्वारा वह उन विचारों का उत्पादन करता है जो अनिवार्य रूप से नए हो और जिन्हें वह व्यक्ति पहले से न जानता हो। इस प्रकार शिक्षक में सृजनात्मक चिंतन, सृजनात्मकता कौशल का होना आवश्यक है।

शिक्षण सृजनात्मकता से तात्पर्य, शिक्षक शिक्षण के लिये विभिन्न–विभिन्न प्रकार के शिक्षण कौशलों का प्रयोग करता है प्रत्येक शिक्षक की शिक्षण करने की अपनी एक शैली होती है जो कि प्रत्येक शिक्षक सृजनात्मक चिंतन एवं अभिनव शैली से अपने शिक्षण शैली को विकसित करता है, शिक्षक के शिक्षण शैली में विभिन्नता शिक्षक में व्यक्तिगत विभिन्नता के कारण होती है व्यक्तिगत विभिन्नता के आधार पर शिक्षक शिक्षण में सृजनात्मकता लाता है जिसका शिक्षण कौशलों पर सार्थक प्रभाव होता है इसमें वह शिक्षण कार्य को आनंदमय एवं रूचिकर बनाने का प्रयास करता है इस प्रकार के शिक्षण व अधिगम में कक्षा के प्रत्येक छात्र सक्रिय रूप से भाग लेते है तथा वह करके सीखने एवं अनुभाव के द्वारा सीखते है इसमें विभिन्न छोटी–छोटी क्रियाकलापओं के माध्यम से शिक्षण में सृजनात्मकता आती है।

शिक्षक का व्यावसायिक विकास उनके **आत्म सम्प्रत्यय** पर आधारित होता है। आत्म प्रत्यय शब्द का प्रथम प्रयोग रोजर्स द्वारा किया गया। आत्म–संप्रत्यय से तात्पर्य व्यक्ति के उन सभी पहलुओं एवं अनुभूतियों से होता है। जिससे व्यक्ति अवगत होता है। हालांकि उसका यह प्रत्यक्षण हमेशा सही नहीं होता है। आत्म–संप्रत्यय को व्यक्ति प्रायः विशेष कथनों के रूप में व्यक्त करता है। जैसे–''मैं एक व्यक्ति हूँ जो ....''। आत्म संप्रत्यय की दो विशेषतायें हैं– पहली विशेषतायें यह है कि आत्म–संप्रत्यय का एक बार निर्माण हो जाने पर उसमें सामान्यतः परिवर्तन नहीं होता हैं। हाँ, बहुत कोशिश करने से उसमें परिवर्तन हो सकता है जो अनुभूतियाँ व्यक्ति के आत्म–संप्रत्यय के साथ असंगत होती है, उसे व्यक्ति स्वीकार नहीं करता है और यदि स्वीकार भी करता है तो विकृत रूप में। आत्म–प्रत्यय की दूसरी विशेषता है कि व्यक्ति का स्वप्रत्यय उसके वास्तविक या जैविक आत्मन (Biological Self) से भिन्न होता है। जैविक आत्मन का कुछ अंश या भाग ऐसा होता है जिससे व्यक्ति अवगत नहीं होता है। अतः इसे आत्म–प्रत्यय नहीं कहा जा सकता है परन्तु जैसे ही व्यक्ति उस अंश या भाग से अवगत हो जाता है वह आत्म संप्रत्यय बन जाता है। जैसे– 1 यकृत (Liver) हमारे जैविक संप्रत्यय का एक अंश या भाग है न कि हमारे आत्म संप्रत्यय का परन्तु यदि व्यक्ति का यकृत खराब ढंग से कार्य करने लगता है, तो वह उससे अवगत हो जाता है और तब यह आत्म सम्प्रत्यय का उदाहरण होगा।

आइजेन्क और उसके साथियों (1972). ने आत्म–प्रत्यय को परिभाषित करते हुए लिखा है कि व्यक्ति के व्यवहार, योग्यताओं और गुणों के सम्बंध में उसकी अभिवृत्ति, निर्णयों और मूल्यों के योग को ही आत्म–प्रत्यय कहते है।

शिक्षकों का शैक्षिक विकास उनके आत्म सम्प्रत्यय पर आधारित होता है। मनोविज्ञान का एक सिद्वान्त है कि मानव जैसा सोचता है वैसा ही उसका अन्तर मन ग्रहण करता है और उसी प्रकार से मानव कार्य करने के लिए प्रेरित होता है। शिक्षक आत्म सम्प्रत्यय के आधार पर ही शैक्षिक क्षेत्र में बहुत अधिक उपलब्धियां प्राप्त करता है। कभी–कभी शिक्षक स्वयं को विभिन्न गतिविधियों को करने के लिए निर्देशित करते हैं। इन गतिविधियों में प्रायः आत्म सम्प्रत्यय और शिक्षक का व्यक्तित्व सम्मिलित होता है। आत्म सम्प्रत्यय शिक्षा विज्ञान का महत्वपूर्ण क्षेत्र है जिसमें सम्पूर्ण मानव अस्तित्व का एक भाग आत्म सम्प्रत्यय है। आत्म सम्प्रत्यय का प्रयोग शिक्षा एवं मनोविज्ञान के क्षेत्र में इतने विस्तृत रूप से किया जाता है कि इसे सामान्य रूप में व्यक्त आत्म से संबंधित विचारों, भावनाओं एवं अभिव्यक्तियों से समझा जाता है। शिक्षक भी आत्म सम्प्रत्यय के आधार पर ही सामाजिक, मानसिक एवं शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में बहुत सारी सफलतायें प्राप्त करता है।

कार्ल रोजर्स ने, आत्म प्रत्यय को तीन विभिन्न तत्वों में विभाजित किया है–

- आपका अपने बारे में जो विचार है।
- आप स्वयं को क्या मूल्य प्रदान करते हो।
- आप स्वयं को वास्तव में क्या समझते हो।

भारतीय शिक्षा प्रणाली में शिक्षक का एक महत्वपूर्ण गुण **समावेशीय अभिवृत्ति** है। समावेशीय अभिवृत्ति से तात्पर्य शिक्षक की ऐसी अभिवृत्ति है जिसमें मूल्यों, ज्ञान प्रणालियों और संस्कृतियों में प्रक्रियाओं और संरचनाओं के सभी स्तरों पर समावेशी नीतियों और प्रथाओं के सृजन के माध्यम से बुनियादी मानव और शारीरिक, संवेदनशील, बौद्धिक या स्थितिजन्य हानियों के साथ सभी नागरिक अधिकारों को प्राप्त किया जाता है'।

शिक्षक जब विद्यालय में शिक्षण के लिए जाता है तो कक्षा में उसे विभिन्न प्रकार के शिक्षार्थी मिलते है इनमें कुछ दिव्यांग, पिछडे, बौद्धिक रूप से पिछडे हो सकते है प्रायः यह देखा जाता है कि शिक्षक कभी–कभी उनके साथ एकसमान व्यवहार नहीं करता है, जिससे उन बच्चों के विकास के समुचित अवसर प्राप्त नहीं होते है। शिक्षक के इस व्यवहार को दूर करने के लिए शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रम में इस प्रकार के बच्चों से जुड़े पहलुओं का बोध करवाया जाता है, जब शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी विद्यालय में इस प्रकार के बच्चों के सम्पर्क में आते है शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षार्थियों को सिखाने के विभिन्न कौशल विकसित होते है। जो उन विशिष्ट बालकों के सर्वांगीण विकास में सहायता करते है। समावेशीय अभिवृत्ति से तात्पर्य है, कि शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों में विद्यार्थियों (पिछडे, वंचित या अलाभान्वित, विकलांग) के प्रति सकारात्मक रूख एवं एकात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करना जिससे उन्हे भी समाज की मुख्य धारा में जोड़ा जा सके और राष्ट्र उन्नति में भागीदारी के लिए प्रेरित किया जा सके। प्रशिक्षण कार्यक्रम के घटक केस स्टडी, एक्शन रिसर्च एवं निदानात्मक शिक्षण इत्यादि प्रक्रियाओं के द्वारा शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में समावेशीय अभिवृत्ति विकसित की जा सकती है।

शिक्षक की सफलता में एक महत्वपूर्ण कारक का अधिक योगदान होता है जिसे **संवेगात्मक बुद्धि** कहते हैं। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र की सफलता व्यक्ति की संवेगात्मक बुद्धि पर निर्भर करती है। संवेगों को उचित तरह से समझना और नियन्त्रित करना व्यक्ति की सफलता के लिए अत्यन्त आवश्यक है। संवेगों के उचित नियन्त्रण द्वारा व्यक्ति स्वयं को संवेगात्मक रूप से स्थिर बनाता है। व्यक्ति स्वयं को नकारात्मक भावों से दूर रखता है। संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति में सकारात्मक भावों को उत्पन्न कर, उसकी सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। **डेनियल गोलमैन** (1997) के अनुसार– ''संवगोत्मक बुद्धि अपने एवं दूसरों के भावों को पहचानने की क्षमता तथा अपने आप को अभिप्रेरित करके एवं अपने सम्बन्धों में संवेग को प्रबन्धित करने की क्षमता है। संवेगात्मक बुद्धि द्वारा उन क्षमताओं का वर्णन होता है जो शैक्षिक बुद्धि या बुद्धि लब्धि द्वारा मापे जाने वाले पूर्णतः संज्ञानात्मक क्षमताओं से भिन्न परन्तु उसके पूरक होते हैं।''

संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति में सामाजिक कौशलों का विकास करती है। यह व्यक्ति के सम्बन्धों को व्यवस्थित करने एवं सामाजिक सम्बन्धों को बनाने में सहायता प्रदान करती है। संवेगात्मक बुद्धि का जैसा स्तर होता है वैसा ही व्यक्ति का सामाजिक स्तर बन जाता है। संवेगात्मक बुद्धि के द्वारा व्यक्ति में आत्मविश्वास, आत्मप्रेरणा, आत्मसंयम, आत्म जागरूकता उत्पन्न होती है जो प्रत्येक व्यक्ति की सफलता में सहायक सिद्ध होती है। शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक सफलता के निर्धारण में सबसे अधिक भूमिका संवेगात्मक बुद्धि की होती है। यदि किसी शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी की बुद्धि लब्धि बहुत अच्छी है, किन्तु उसमें संवेगात्मक बुद्धि की कमी है तो यह सम्भव है कि वह शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी अपनी बुद्धि के अनुसार सफलता न प्राप्त कर सके, क्योंकि संवेगात्मक बुद्धि का प्रभाव बालक की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।

समस्या का प्रादुर्भाव :

हमारे देश व मानव प्रगति का भविष्य उन हजारों कर्णधारों पर निर्भर करता है, जिन्हें शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ हैं अर्थात् शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों में देश व समाज की प्रगति करने की सामर्थ्यता विकसित करना, उन्हें शिक्षित करने वाले शिक्षकों का उत्तर–दायित्व होता है किसी समाज की गुणवत्ता उस समाज में शिक्षा की गुणवत्ता द्वारा निर्धारित होती है शिक्षा की गुणवत्ता, विद्यालयी शिक्षकों की गुणवत्ता, शिक्षा शास्त्र, शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के शिक्षा विभागों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है।

वर्तमान शताब्दी शिक्षकों से अपेक्षा करती है कि वह वैज्ञानिक, तकनीकी एवं विभिन्न कला कौशल युक्त, भारतीय मूल्य व संस्कारवान प्रजातान्त्रिक गुणों से युक्त संवेदनशील समाज में समायोजित छात्रों का विकास करें, हम जानते है कि इतना महत्वपूर्ण कार्य शिक्षक तभी कर सकता है जब शिक्षक गुणवान, मूल्यवान तनाव रहित हो तथा वह शिक्षण अभिवृत्ति, शिक्षण कौशल व शिक्षण सृजनात्मकता से युक्त हो, समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका है इसलिए वह युगों से सम्मानित होता आ रहा है अध्यापक ऐसे हो जो आदर्श व्यक्तित्व के स्वामी हो जिससे कि वह समाज एवं राष्ट्र को लाभ पहुँचा सकें।

राष्ट्रीय विकास के लिए मानवीय संसाधन को उपयोगी बनाने में अध्यापकों की अहम् भूमिका है। कक्षागत् क्रियाकलापों के लिये अध्यापक अनेक शिक्षण–युक्तियों एवं विधियों का प्रयोग करता है। वर्तमान में गुणात्मक शिक्षा उपलब्ध कराने पर अधिक बल दिया जा रहा है, शिक्षक की शिक्षण में सृजनात्मक अभिवृत्ति शिक्षार्थियों की रचनात्मकता को पोषित करती है। जिससे शिक्षार्थी उपलब्ध भौतिक एवं मानवीय संसाधनों का समुचित प्रयोग करके संतोषजनक परिणामों को सुनिश्चित करते हैं। यशपाल समिति (1992), ने शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों के स्वतंत्र चिंतन व स्व–अधिगम क्षमता के विकास पर मुख्य जोर दिया। एन.सी.एफ. (2005), आर.टी.ई. एक्ट (2009), जस्टिस वर्मा आयोग (2012) एवं एन.सी.एफ.टी.ई. रेगुलेशन (2014) आदि ने शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता पर बल दिया है, ताकि शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में सृजनात्मकता व गुणवत्ता आ सके।

प्रत्येक शैक्षिक संस्था में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान होता है शिक्षकों की कार्यशीलता, शिक्षण कौशल, शिक्षण अभिवृत्ति व शिक्षण सृजनात्मकता पर ही शिक्षण संस्थानों की सफलता व असफलता निर्भर करती है प्रभावशाली शिक्षण के लिए अध्यापक में शिक्षण अभिवृत्ति, आत्म प्रत्यय, समावेशीय अभिवृत्ति, संवेगात्मक बुद्धि व शिक्षण सृजनात्मकता होना आवश्यक है क्योंकि शिक्षण के प्रति शिक्षक का सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो, वह कक्षाकक्ष में छात्रों को शारीरिक एवं मानसिक रुप से समझ सकें, शिक्षण कार्य को सृजनात्मक रूप से कर सके, शिक्षण में सफलता की संभावनाऐं शिक्षण सृजनात्मकता के द्वारा ही सम्भव हैं वर्तमान में प्रायः देखा जाता है, कि शिक्षण सृजनात्मकता न होने के कारण शिक्षकों के सम्मुख विभिन्न प्रकार की समस्यायें नित्य प्रति बढ़ती ही जा रही है जैसे–कार्य क्षमता में कमी, शिक्षण अकुशलता, दुर्व्यव्यवहार मानसिक दबाव की स्थिति आदि। अतः उत्तम शिक्षक बनाने के लिए शिक्षक में योग्यता, कार्यशीलता, आत्म प्रत्यय, समावेशीय अभिवृत्ति, संवेगात्मक बुद्धि, शिक्षण कुशलता व शिक्षण सृजनात्मकता का होना अनिवार्य माना जाता है, शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण सृजनात्मकता को विकसित करने के लिए दो वर्षीय बी.एड. प्रशिक्षण कार्यक्रम आदि शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता हेतु शिक्षण प्रशिक्षण के पर्याप्त अवसरों को स्थान दिया गया है।

शोध प्रश्न

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान ही शोधार्थी के मन में यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि,

- शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों के प्रशिक्षण में आत्म प्रत्यय, समावेशीय अभिवृत्ति एवं संवेगात्मक बुद्धि किस प्रकार सहायक होगें ?
- शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों के प्रशिक्षण में शिक्षण सृजनात्मकता किस प्रकार सहायक होगी ?
- क्या शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण सृजनात्मकता के व्यावहारिक पक्ष पर आत्म प्रत्यय, समावेशीय अभिवृत्ति एवं संवेगात्मक बुद्धि का सार्थक प्रभाव हो सकता है ?
- क्या शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण सृजनात्मकता के व्यावहारिक पक्ष पर आत्म प्रत्यय, समावेशीय अभिवृत्ति एवं संवेगात्मक बुद्धि की अन्तर्क्रिया का सार्थक प्रभाव हो सकता है ?

उपरोक्त सभी प्रश्नों के उत्तरप्राप्ति हेतु शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत समस्या को शोध समस्या के रूप में चयनित किया गया है।

समस्या का औचित्य :

वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व एक नवीन शिक्षा तन्त्र की ओर बढ़ रहा है चारों ओर विज्ञान व तकनीकी का प्रचार–प्रसार हो रहा है शिक्षा जगत की उन्नति में भी विज्ञान व तकनीकी का बहुत बड़ा योगदान हैं आज के शिक्षकों पर ही देश का भविष्य निर्भर है क्योंकि शिक्षक को समाज व राष्ट्र का निर्माण कर्त्ता कहा गया हैं उनकी शिक्षा व प्रशिक्षण तकनीकी पर आधारित होनी चाहिए। ताकि उनमें शिक्षण अभिवृत्ति, शिक्षण कौशल, शिक्षण सृजनात्मकता, आत्म प्रत्यय, समावेशीय अभिवृत्ति, संवेगात्मक बुद्धि, कार्यशीलता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण आदि की क्षमता विकसित हो सके, तभी वे समाज व राष्ट्र की उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान दे सकेंगे। शिक्षक के व्यावसायिक विकास में उनके आत्म प्रत्यय, समावेशीय अभिवृत्ति, संवेगात्मक बुद्धि व शिक्षण सृजनात्मकता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, अतः बी.एड. के शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण सृजनात्मकता का उनके शिक्षण पर सार्थक प्रभाव होता है। शोध विषय से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करने से ज्ञात होता है, कि शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण

सृजनात्मकता, आत्म प्रत्यय, समावेशीय अभिवृत्ति एवं संवेगात्मक बुद्धि चरों से सम्बन्धित देश–विदेश में अनेक शोध अध्ययन हुए है जो संक्षेप में अग्रलिखित है–

तालिका 1.1 शिक्षण सृजनात्मकता, आत्म प्रत्यय, समावेशीय अभिवृत्ति एवं संवेगात्मक बुद्धि से सम्बन्धित शोध अध्ययन–

क्र.सं.	वर्ष	शोधकर्त्ता	शोध अध्ययन का विषय	निष्कर्ष
1	2019	मेहरबी, फतेहमे एवं गुडराज़ी, कोरोश	कंपैरिजन ऑफ ऐटीट्यूड टुवॉडर्स क्रिएटिविटी, एकेडमिक परफारमेंस एण्ड लर्निंग स्पीड ऑफ स्टूडेन्ट्स इन स्मार्ट एण्ड ऑर्डिनरी स्कूल्स।	अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि स्मार्ट एवं सामान्य स्कूल में अध्ययनरत् छात्रों की सकारात्मकता, शौक्षिक प्रदर्शन एवं छात्रों की अधिगम गति के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है स्मार्ट स्कूल में अध्ययनरत् छात्रों की अभिवृत्ति अधिक थी सकारात्मकता, शौक्षिक प्रदर्शन एवं छात्रों की अधिगम गति के प्रति अभिवृत्ति में स्कूल बुद्धिमत्ता की अहम भूमिका है।
2	2019	ओसामा, अलमहदी एवं हैंकिन, बकलम	प्री–सर्विस टीचर्स ऐटीट्यूडर्स टुवॉडर्स इनक्लूसीव एजूकेशन ड्यूरिंग देयर स्टडीज इन बहरीन टीचर्स कॉलेज	अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति, भाव व चिंता में सार्थक अन्तर नही है, शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों के द्वारा विकलांग छात्रों को पढ़ाने में आत्मविश्वास स्तर एवं संवेगात्मक पहलू के मध्य सार्थक नकारात्मक सहसम्बन्ध है, स्थानीय नीति का ज्ञान जो विकलांग छात्रों से सम्बन्धित व संवेगात्मक पहलू के मध्य सार्थक नकारात्मक सहसम्बन्ध है।
3	2018	गेयेन, रूमा एवं बेहरा, संतोष कुमार	सेल्फ–कांसेप्ट ऑफ पोस्ट ग्रेजुएशन स्टूडेंट्स :एन एम्पीरिकल स्टडी	अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि आत्म प्रत्यय के विभिन्न आयाम का अध्ययन किया गया, छात्रों के आत्म प्रत्यय में लिंग व निवास के आधार पर सार्थक अन्तर नही है किन्तु छात्रों के आत्म प्रत्यय में सामाजिक वर्ग, शैक्षिक वर्ष, धर्म व विषय वर्ग के आधार पर सार्थक अन्तर है।
4	2018	टिमा, सलोविता	ऐटीट्यूडर्स ऑफ टीचर्स टुवॉडर्स इनक्लूसीव एजूकेशन इन फिनलैंड	अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति निम्न है समावेशी शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति व व्यवहार बताते है कि शिक्षकों की मौजूदा क्षमता नीति परिवर्तन का संकेत है।
5	2018	के, रवीन्द्र एवं गंगाय,	टीचर्स टेक्नो ऐटीट्यूड टुवॉडर्स इनक्लूसीव क्लासरूम	अध्ययन के परिणाम भविष्य के स्कूलों में समावेशी तकनीकी कक्षा के नियोजन व

		मारापटला	क्लाइमेट एट स्कूल लेवल—कंपैरेटिव स्टडी बिटवीन द् यू. एस.ए. एण्ड इंडिया	क्रियान्वन के लिये बेहतर सुझाव व अवसरों को निधारित करने में सहायक होगे, छात्र विषय में ज्ञान का विस्तार एवं शिक्षक तकनीकी कौशलों का विकास कर सकेगे, दोनो देश के शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति होगी।
6	2017	गोजन, गोकसु	बीइंग क्रिएटिव फॉर टीचिंग क्रिएटिविटीः टीचर्स एण्ड इंस्ट्रक्टर्स सेल्फ एसेसमेंटर्स रिगाडिंग क्रिएटिविटी।	अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि सभी शिक्षक व प्रशिक्षकों की सृजनात्मकता के प्रति सहभागिता स्वतंत्र रूप में थी, शिक्षक व प्रशिक्षकों की सृजनात्मकता के प्रति सार्थक सकारात्मक अभिवृत्ति थी, शिक्षक व प्रशिक्षकों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं था, सांस्कृतिक सीमा का प्रभाव शिक्षक व प्रशिक्षकों के सामाजिक, संवेगात्मक एवं व्यक्तिगत विकास पर अधिक नहीं होता है।
7	2017	डीहैन, रॉबर्ट एल०	टीचिंग क्रिएटिविटी एण्ड इनवेंटिव प्रॉब्लम सॉल्विंग इन साइंस।	अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि सभी अनुदेशात्मक रणनीतियाँ से कॉलेज छात्रों में अधिगम स्तर बढ़ता है।
8	2017	ब्रेंडा, लियोन ग्रीन	टीचर्स ऐटीट्यूडर्स टुवॉडर्स इनक्लूसीव क्लासरूम	अध्ययन के परिणाम, सहशिक्षण रणनीतियों का बेहतर करने में, कक्षा प्रबन्धन, अधिगम अक्षमता की सूचना के लिये शिक्षक शिक्षण पाठ्यक्रम को विकसित में उपयोगी होगे। छात्र अधिगम व शिक्षण अभ्यास पर अभिवृत्ति का प्रभाव सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन में सहायक है।
9	2017	जैन, मंजू	ए स्टडी ऑफ ऐटीट्यूड ऑफ पीपुल टीचर्स टुवॉडर्स इनक्लूसीव एजूकेशन	अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि समावेशीय शिक्षा के प्रति पुरूष व महिला शिक्षक—प्रशिक्षणार्थियों में सार्थक अन्तर है अध्ययन में पाया गया कि समावेशीय शिक्षा के प्रति महिला शिक्षक—प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति अधिक है पुरूषों की तुलना में।
10	2016	मैनीन, कैरी ए०	ए केस स्टडी ऑफ आर्ट्स इंटीग्रेशन प्रैक्टिसेज इन डेवलपिंग द् ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी स्किल्स ऑफ क्रिटिकल थिंकिंग, क्रिएटिविटी, कम्युनिकेशन एण्ड कोलैबोरेशन।	अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि छात्र अर्जन के लिये सृजनात्मक चिन्तन, सृजनात्मकता, संप्रेषण व सहयोग को कला एकीकरण बढ़ावा देता है। कला एवं 21वीं सदी के कौशल (सृजनात्मक चिन्तन, सृजनात्मकता, संप्रेषण व सहयोग) में सम्बन्ध है।
11	2015	तुर्कुलेट, अलीना	टीचर्स फॉर द् ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी. विल इमोशनल इंटेलिजेंस मेक द् डिफरेंस ?	अध्ययन के परिणाम प्रदर्शित कर रहे है, कि शिक्षकों का संवेगात्मक विकास औसत व औसत से ऊपर है, कार्य करने के लिए मुखरता है, परिवर्तन की दिशा में अभिनव शैली है, अन्तर्क्रिया के संवेगात्मक मौलिक प्रकार है।
12	2014	उपाध्याय, प्रतीक	ए केस स्टडी ऑफ रिलेशनशिप बिटवीन इमोशनल	अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि संवेगात्मक बुद्धि सकारात्मक रूप से शैक्षिक

			इंटेलिजेंस एण्ड एकेडमिक अचीवमेंट अमोंग स्टूडेंट–टीचर्स	उपलब्धि से सम्बन्धित है शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की सैद्धांतिक परीक्षा में उच्च संवेगात्मक बुद्धि एवं व्यावहारिक परीक्षा में निम्न संवेगात्मक बुद्धि है।
13	2014	एंटीनानाजस, जीस एल० एवं साल्वावर, कार्लोस	इमोशनल इंटेलिजेंस एण्ड पर्सनैलिटी इन स्टूडेंट–टीचर्स	अध्ययन के परिणामों ने प्रदर्शित किया है कि किस तरह से विशिष्टताओं वाले शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी को अन्य प्रशिक्षणार्थी से भिन्न व्यावसायिक विशेषता की आवश्यकता होती है वह अन्य विशिष्टताओं का अध्ययन कर रहें है।
14	2014	विल्हेम, एंजेलिका एवं गलिना, ग्लोटोवा	टीचर्स सेल्फ–कांसेप्ट एण्ड सेल्फ–एस्टीम इन पेडागोजीकल कम्युनिकेशन	अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि आत्म प्रत्यय में निम्न को सम्मिलित किया है, सम्प्रेषक के रूप में स्वयं का अनुमान, उनकी स्थिति को प्रभावित करना तथा व्यावसायिक संतुष्टि। कम आत्मसम्मान वाले शिक्षकों को मनोवैज्ञानिक रखरखाव की आवश्यकता होती है, तथा उनके मनोवैज्ञानिक स्थिति को बेहतरी के लिये निर्देशित करना।
15	2013	टी०, अरुणा भारती एवं श्रीदेवी, पी०	ए स्टडी ऑन सेल्फ–कांसेप्ट ऑफ एडोलिसेंट्स	अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि आत्म प्रत्यय के विभिन्न आयाम पर, 27.5 प्रतिशत किशोरों का आत्म प्रत्यय उच्च है एवं 72.5 प्रतिशत किशोरों का आत्म प्रत्यय औसत है। यह अध्ययन किशोरों के आत्म प्रत्यय स्तर को बनाये रखने के लिये शिक्षक व अभिभावकों के लिये सहायक होगा।
16	2013	अली, मजीद	द् इफेक्ट ऑफ द् प्रोजेक्ट मेथड ऑन द् डेवलपमेंट ऑफ क्रिएटिव थिंकिंग, क्रिटिकल थिंकिंग एण्ड इमोशनल इंटेलिजेंस : ए केस स्टडी ऑफ सेकेन्डरी स्कूल स्टूडेंट्स इन द स्टेट ऑफ कुवैत	अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि छात्रों के शैक्षिक विशेषज्ञता व लिंग स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है छात्रों के सृजनात्मक चिन्तन पर शैक्षिक विशेषज्ञता व लिंग स्तर का प्रभाव है किन्तु शैक्षिक विशेषज्ञता व लिंग स्तर की अन्तर्क्रिया का प्रभाव नही है सृजनात्मक चिन्तन संवेगात्मक बुद्धि की भविष्यवाणी करती है।
17	2012	मिश्रा, श्री कृष्णा	ए स्टडी ऑन सेल्फ–कांसेप्ट एण्ड इंटरेस्ट इन टीचिंग ऑफ प्री–सर्विस टीचर्स ऑफ सेकेन्डरी लेवल	अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों का आत्म प्रत्यय अति उच्च है, रूचि औसत है, शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों के आत्म प्रत्यय व रूचि में सार्थक सम्बन्ध है। महिला शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों का आत्म प्रत्यय उच्च है पुरूषों की तुलना में। महिला व पुरूष शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की रूचि व आत्म प्रत्यय में सार्थक अन्तर है।
18	2011	कारपोवा, एलेना एवं मारकेट्टी, सारा बी०	द् ऐफीकेसी ऑफ टीचिंग क्रिएटिविटीः एसेसमेंट ऑफ स्टूडेंट्स क्रिएटिव थिंकिंग बिफोर एण्ड आफ्टर एक्सरसाइज	अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि अभ्यास के बाद विश्वविद्यालय छात्रों का सृजनात्मक चिन्तन सार्थक रूप से उच्च है।

उपर्युक्त शोध अध्ययनों का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है, कि पूर्व शोध अध्ययनों में आत्म प्रत्यय चर के साथ विभिन्न चर रुचि, आत्मसम्मान, सम्प्रेषण, शिक्षण स्तर का, समावेशीय अभिवृत्ति चर के साथ विभिन्न चर अभिवृत्ति, समावेशीय शिक्षा, कक्षाकक्ष, वातावरण का, संवेगात्मक बुद्धि चर के साथ विभिन्न चर शैक्षिक उपलब्धि, शैक्षिक प्रदर्शन, व्यक्तित्व, सृजनात्मक चिंतन, तार्किक चिंतन, शिक्षण विधि का व शिक्षण सृजनात्मकता चर के साथ विभिन्न चर अभिवृत्ति, शैक्षिक उपलब्धि, शैक्षिक प्रदर्शन, सृजनात्मकता, अधिगम गति, कला समेकित अधिगम आदि के सन्दर्भ में तो अनेक शोध कार्य हुए है, परन्तु आत्म प्रत्यय, समावेशीय अभिवृत्ति एवं संवेगात्मक बुद्धि के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण सृजनात्मकता पर प्रभाव का अध्ययन से सम्बन्धित शोध कार्य शोधार्थी को शोध अध्ययनों के दौरान उपलब्ध नहीं हुए। अतः आत्म प्रत्यय, समावेशीय अभिवृत्ति एवं संवेगात्मक बुद्धि के वास्तविक महत्व तथा शिक्षण के प्रति बी.एड शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों में पाये जाने वाली सकारात्मक व नकारात्मक शिक्षण सृजनात्मकता का अध्ययन करने की दृष्टि से शोधार्थी ने शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण सृजनात्मकता पर आत्म प्रत्यय, समावेशीय अभिवृत्ति एवं संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन, को एक शोध विषय के रूप में चयनित किया है।

समस्या कथन :

शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण सृजनात्मकता पर आत्म प्रत्यय, समावेशीय अभिवृत्ति एवं संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन।

समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या :

अध्ययन का मुख्य उद्देश्य शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण सृजनात्मकता पर आत्म प्रत्यय, समावेशीय अभिवृत्ति एवं संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन करना हैं जिसके प्रयुक्त पद शिक्षण सृजनात्मकता, आत्म प्रत्यय, समावेशीय अभिवृत्ति एवं संवेगात्मक बुद्धि हैं।

शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी

शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी वह व्यक्ति है जो किसी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान में शिक्षक बनने हेतु आवश्यक डिग्री लेने के लिए नामांकित होता है तथा निर्धारित पाठ्यक्रम को निर्धारित समय में पूर्ण कर शिक्षक शिक्षा में डिग्री प्राप्त करता है।

कार्यात्मक परिभाषा

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों से तात्पर्य उन बी0एड0 अभ्यर्थियों से है जो कि दो वर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत हैं।

शिक्षण सृजनात्मकता

शिक्षण

क्लार्क (2004). के अनुसार, शिक्षण वह प्रक्रिया है जो शिक्षार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिये नियोजित तथा संचालित की जाती है।

सृजनात्मकता

डार्ले (2009). के अनुसार, उपलब्ध प्रत्ययों को नये रूप में एक साथ रखकर कुछ नया सृजन कर देने या विलक्षण निष्कर्ष पर पहुँचने की योग्यता को सृजनात्मकता कहते है।

कार्यात्मक परिभाषा

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शिक्षण सृजनात्मकता से तात्पर्य है प्रत्येक शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी, प्रशिक्षण कार्यक्रम में शिक्षण करने के लिये शिक्षण कौशलों को अपनी शैली में विकसित करता है तथा अपने ढंग से प्रयोग करता है वह उपलब्ध प्रत्ययों को नये रूप में एक साथ रखकर कुछ नया सृजन करने का प्रयास करता है जिससे कि शिक्षण में सृजनात्मकता आ सके, शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी में शिक्षण के प्रति सृजनात्मक चिंतन होना आवश्यक है शिक्षण कौशलों का सार्थक प्रभाव शिक्षण पर होता है, शिक्षण प्रक्रिया में विभिन्न छोटी–छोटी क्रियाकलापओं के द्वारा शिक्षण में सृजनात्मकता आती है।

आत्म प्रत्यय

हरलॉक (1978). ने आत्म प्रत्यय को स्पष्ट करते हुए कहा है "आत्म प्रत्यय वे प्रतिमायें है जो व्यक्ति स्वंय अपने सम्बन्ध में रखते है आत्म प्रत्यय में व्यक्ति के वे विश्वास होते है जो कि व्यक्ति अपनी शारीरिक, मनोवैज्ञानिक विशेषताओं के सम्बन्ध में रखता है।"

कार्यात्मक परिभाषा

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आत्म प्रत्यय से तात्पर्य है, वे सभी प्रत्यय, विश्वास, अभिवृत्तियाँ एवं भावनायें जिसे शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी स्वयं की विशेषताओं के एक भाग के रूप में देखता है यह उसके स्वास्थ्य,

शारीरिक बनावट, मानसिक क्रियाओं, शैक्षिक स्तर, व्यवहारिक विशेषताओं, मानसिक स्वास्थ्य, सवेंगात्मक प्रवृत्तियों और सामाजिक–आर्थिक स्तर आदि के सन्दर्भ में विचार करने से है।

समावेशीय अभिवृत्ति

समावेशीय

उमातुलि (2002). के अनुसार, "समावेशन या समावेशीय एक प्रक्रिया है, जिसमें प्रत्येक विद्यालय को दैहिक, संवेगात्मक तथा सीखने की आवश्यकता को पूरा करने के लिए संसाधनों का विस्तार करना होता है।"

अभिवृत्ति

सोरेन्सन (1977). के अनुसार, "अभिवृत्ति किसी वस्तु के प्रति एक विशिष्ट भावना है इसलिए इसमें उस वस्तु (चाहे वह व्यक्ति, विचार या पदार्थ कुछ भी हो) से जुड़ी हुई परिस्थितियों में एक निश्चित प्रकार के व्यवहार करने की प्रवृत्ति निहित होती है। यह आंशिक रूप में तार्किक और आंशिक रूप में संवेगात्मक होती है। तथा किसी भी व्यक्ति में जन्मजात न होकर उपार्जित होती है।"

कार्यात्मक परिभाषा

प्रस्तुत शोध अध्ययन में समावेशीय अभिवृत्ति से तात्पर्य शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी के उस व्यवहार से है, जिसके द्वारा वह सभी सामाजिक वर्ग, स्तर, लिंग व विशिष्ट छात्रों को सामान्य छात्रों की भाँति समावेशीय रूप से शिक्षित करें, तथा उन्हे भी विकास के समुचित अवसर प्रदान करें, जिससे वह राष्ट्र निर्माण में भागीदार बने।

संवेगात्मक बुद्धि

डेनियल गोलमैन (1997). के अनुसार, "संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति के संवेगात्मक समायोजना से सम्बन्धित है जिसका सम्बन्ध व्यक्ति की स्वजागृति, स्वप्रेरणा, आवेग नियन्त्रण तथा दूरदर्शिता जैसे गुणों से है।"

कार्यात्मक परिभाषा

प्रस्तुत शोध अध्ययन में संवेगात्मक बुद्धि का तात्पर्य शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी के संवेगों को शुद्धता से प्रत्यक्षीकरण करने और उन्हें व्यक्त करने की योग्यता से है संवेगात्मक बुद्धि को हमारे सम्बन्धों तथा हमारे संवेगों को उचित रूप से प्रेरित करने की क्षमता के रूप में उल्लेखित किया जा सकता है।

अध्ययन के उद्देश्य :

चयनित शोध समस्या के सन्दर्भ में निम्न शोध उद्देश्यों को निधारित किया गया।

1. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण सृजनात्मकता का अध्ययन करना।
2. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों के आत्म प्रत्यय का अध्ययन करना।
3. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की समावेशीय अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
4. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।
5. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण सृजनात्मकता पर आत्म प्रत्यय के प्रभाव का अध्ययन करना।
6. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण सृजनात्मकता पर समावेशीय अभिवृत्ति के प्रभाव का अध्ययन करना।
7. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण सृजनात्मकता पर संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन करना।
8. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण सृजनात्मकता पर आत्म प्रत्यय एवं समावेशीय अभिवृत्ति की अन्तर्क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।
9. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण सृजनात्मकता पर आत्म प्रत्यय एवं संवेगात्मक बुद्धि की अन्तर्क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।
10. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण सृजनात्मकता पर समावेशीय अभिवृत्ति एवं संवेगात्मक बुद्धि की अन्तर्क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।
11. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण सृजनात्मकता पर आत्म प्रत्यय, समावेशीय अभिवृत्ति एवं संवेगात्मक बुद्धि की अन्तर्क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ:

1. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण सृजनात्मकता पर आत्म प्रत्यय का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।
2. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण सृजनात्मकता पर समावेशीय अभिवृत्ति का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।

3. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण सृजनात्मकता पर संवेगात्मक बुद्धि का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।
4. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण सृजनात्मकता पर आत्म प्रत्यय एवं समावेशीय अभिवृत्ति की अन्तर्क्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।
5. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण सृजनात्मकता पर आत्म प्रत्यय एवं संवेगात्मक बुद्धि की अन्तर्क्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।
6. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण सृजनात्मकता पर समावेशीय अभिवृत्ति एवं संवेगात्मक बुद्धि की अन्तर्क्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।
7. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण सृजनात्मकता पर आत्म प्रत्यय, समावेशीय अभिवृत्ति एवं संवेगात्मक बुद्धि की अन्तर्क्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।

अध्ययन में प्रयुक्त चर :

- **स्वतन्त्र चर** – 1. आत्म प्रत्यय।
  2. समावेशीय अभिवृत्ति।
  3. संवेगात्मक बुद्धि।
- **आश्रित चर** – शिक्षण सृजनात्मकता।

अध्ययन की विधि :

प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति के आधार पर शोधार्थी द्वारा अनुसंधान की "कार्योत्तर/घटनोत्तर विधि" (Ex-Post Facto Research) का प्रयोग किया जाएगा।

अध्ययन उपकरण :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त चरों के मापन के लिए 4 उपकरणों का प्रयोग किया जाएगा, 2 उपकरण का विकास अध्ययन के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए विषय विशेषज्ञों के सहयोग से किया जाएगा। अतः निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया जाएगा।

1. शिक्षण सृजनात्मकता – स्वनिर्मित उपकरण।

2. आत्म प्रत्यय – प्रतिभा देओ., सैल्फ कॉन्सेप्ट रैटिंग स्केल (2011)।

3. समावेशीय अभिवृत्ति – स्वनिर्मित उपकरण।

4. संवेगात्मक बुद्धि – डॉ एस. के. मंगल एवं शुभा मंगल, इमोशनल इन्टैलीजेन्स इनवेन्टरी (2012)।

अध्ययन का न्यादर्श चयन :

प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान में अध्ययनरत् बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थिओं को जनसंख्या के रूप के सम्मिलित किया जाएगा, जिसमें सोद्देश्य न्यादर्श विधि द्वारा विश्वविद्यालयों का चयन किया जाएगा, जिसमें एक राज्य विश्वविद्यालय एवं एक डीम्ड विश्वविद्यालय को सम्मिलित किया जाएगा, विश्वविद्यालयों की शिक्षा संकाय के 300–300 शिक्षक प्रशिक्षणार्थी को यादृच्छिक प्रविधि से न्यादर्श के रूप में चयनित किया जाएगा, इस प्रकार कुल 600 शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों का न्यादर्श होगा।

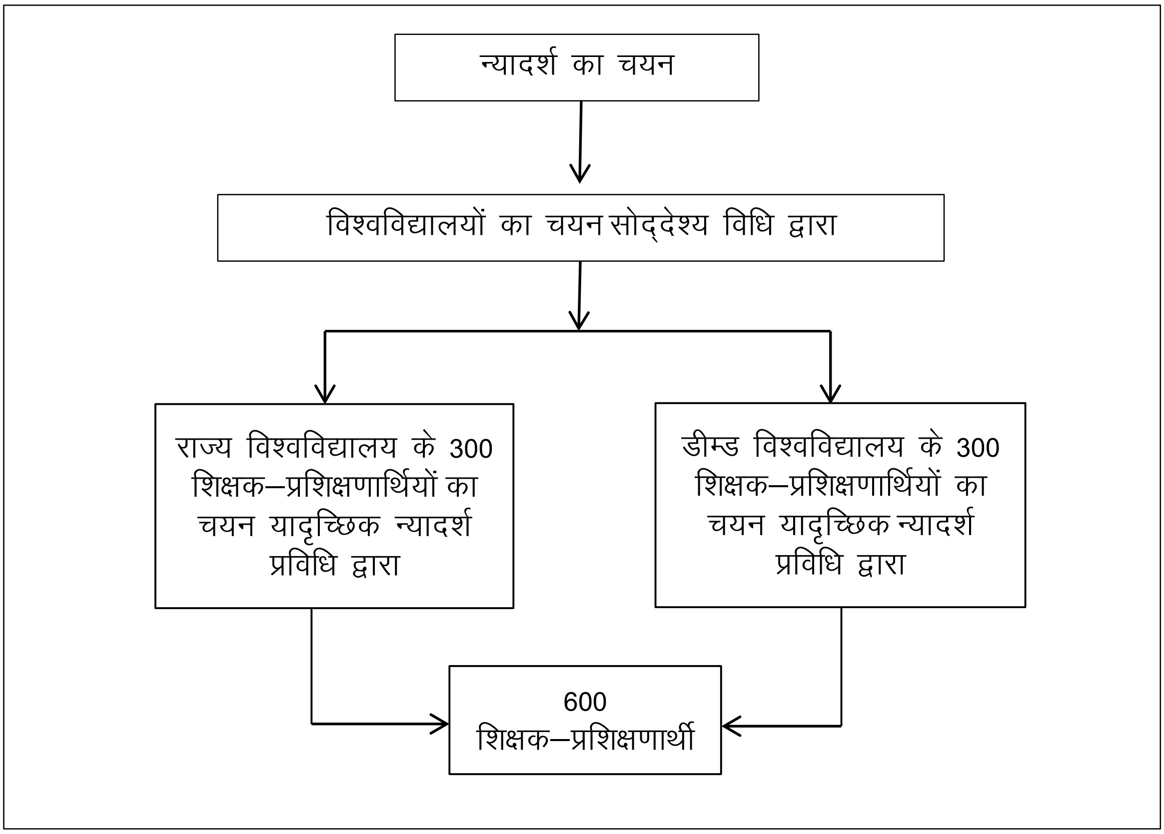

चित्र संख्या 1.1 न्यादर्श चयन

शोध अध्ययन का सीमांकन :

1. प्रस्तुत अध्ययन केवल आगरा शहर तक ही सीमित होगा।
2. प्रस्तुत अध्ययन यू0जी0सी0 द्वारा मान्यता प्राप्त राज्य विश्वविद्यालय एवं डीम्ड विश्वविद्यालय तक सीमित रहेगा।
3. प्रस्तुत अध्ययन में दो वर्ष बी.एड. में अध्ययनरत शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों को सम्मिलित किया जाएगा।
4. प्रस्तुत अध्ययन में परिभाषित जनसंख्या से 600 शिक्षक–प्रशिक्षार्थियों को लिया जाएगा।

सांख्यिकी प्रविधियाँ :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में एकत्रित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रदत्तों प्रकृति को देखते हुए वर्णनात्मक एवं निष्कर्षात्मक दोनो ही प्रकार की सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया जायेगा, जो निम्नवत् है।

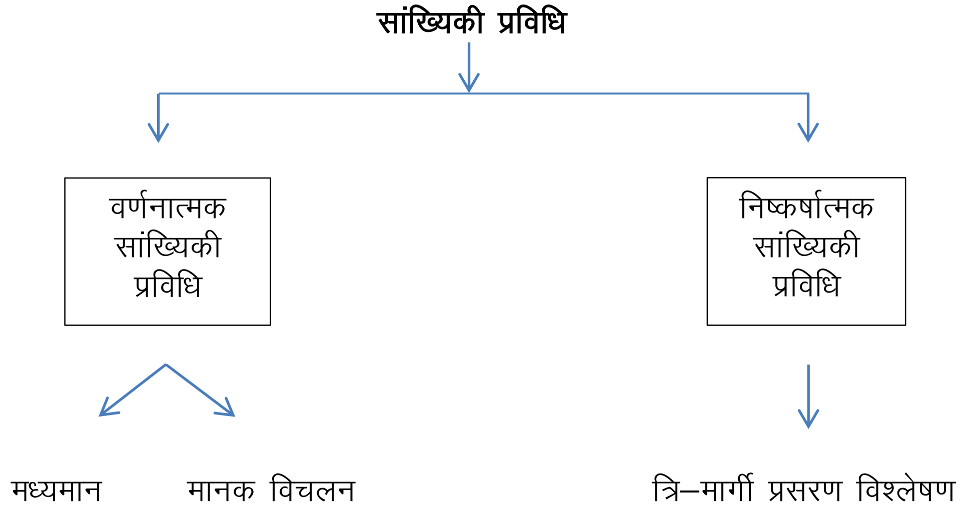

चित्र संख्या 1.2 सांख्यिकी प्रविधि

शोध अध्ययन की सार्थकता :

किसी भी समाज का भविष्य एक शिक्षक पर ही निर्भर करता है शिक्षक एक अच्छे सुसंस्कृत समाज के निर्माण में सहायक होते है शिक्षक को ही शिक्षा पद्धति की वास्तविक गत्यात्मक शक्ति एवं शैक्षिक संस्थानों की आधारशिला माना गया है, यद्यपि यह बात सत्य भी है कि विद्यालय भवन, पाठ्यक्रम, पाठ्यसहगामी क्रियाऐं, सहायक शिक्षण सामग्री, आदि सभी वस्तुऐं व क्रियाकलापों का शैक्षिक प्रक्रिया में

महत्वपूर्ण स्थान होता है, परन्तु शिक्षक ही वह शक्ति है जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से शिक्षण व अधिगम प्रक्रिया को सबसे अधिक प्रभावित करता है शिक्षा की गुणवत्ता शिक्षक के शिक्षण कौशल, शिक्षण अभिवृत्ति, कार्यशीलता एवं शिक्षण सृजनात्मकता पर निर्भर करती है। प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी उपरोक्त सभी शैक्षिक घटकों के विषय में जानकारी प्राप्त करता है साथ ही उनके प्रभावी क्रियान्वयन के वास्तविक रूप से परिचित होता है। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के द्वारा शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी विभिन्न व्यवहारिक परिवर्तनों को भी महसूस करता है, जैसे– शिक्षण नवाचार एवं शिक्षण सृजनात्मकता।

शोध अध्ययन द्वारा शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी में विकसित आत्म प्रत्यय के स्तर का ज्ञान हो सकेगा तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम में आत्म प्रत्यय के स्तर को बढ़ाने हेतु विशिष्ट कार्यक्रम विकसित करने का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा। जिससे शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षार्थियों एवं कार्यस्थल संबंधी समस्याओं का निराकरण संभव हो सकेगा।

शोध अध्ययन से शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी की समावेशीय अभिवृत्ति का ज्ञान हो सकेगा तथा समावेशीय अभिवृत्ति के स्तर को बढ़ाने हेतु विशिष्ट कार्यक्रम विकसित करने का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा। जिससे शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षार्थियों एवं कार्यस्थल संबंधी प्रत्यके समस्याओं का निराकरण संभव हो सकेगा। शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी विद्यालयी परिवेश में सामान्य एवं विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकताओं वाले बालकों के संम्पर्क में आते है, प्रत्येक शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी की अभिवृति उन सामान्य एवं विशिष्ट आवश्यकताओं वाले बालकों के प्रति समावेशीय हो सकेगी।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के अंतर्गत शिक्षकों को बाल–मनोविज्ञान के साथ–साथ सांवेगिक रूप से परिपक्व होने की आवश्यकता है शोध अध्ययन से शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी की संवेगात्मक बुद्धि के स्तर का ज्ञान हो सकेगा तथा संवेगात्मक बुद्धि के स्तर को बढ़ाने हेतु विशिष्ट कार्यक्रम विकसित करने का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा। जिससे शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षार्थियों एवं कार्यस्थल संबंधी समस्याओं का निराकरण संभव हो सकेगा। शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी अपने संवेगों तथा व्यवहार को नियन्त्रित करके एक कुशल शिक्षक के रूप में प्रस्तुत हो सकेगा। शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी अपने संवेगों को पहचान सकेगा, संवेगों का उचित प्रकटीकरण कर सकेगा तथा दूसरों के संवेगों को समझकर उसके सामने वैसा ही व्यवहार कर सकेगा।

प्रस्तुत अध्ययन द्वारा शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी की समावेशीय अभिवृत्ति, संवेगात्मक बुद्धि, आत्म प्रत्यय एवं शिक्षण सृजनात्मकता के अनुक्षेत्रों के बोध से उनमें निर्दिष्ट चरों के प्रति रचनात्मक व सृजनात्मक अभिवृत्ति का अनुप्रयोग हो सकेगा, जिसका अप्रत्याशित लाभ शिक्षाविदों, प्रशिक्षकों, अधिगमकर्ताओं की शैक्षिक उपलब्धियों के उन्नयन में भी सहायक होगा, साथ ही शिक्षा व प्रशिक्षण की गुणवत्ता सुधार को भी सम्भव कर सकेगा।

शिक्षण के प्रति सकारात्मक शिक्षण सृजनात्मकता के द्वारा पाठ्यवस्तु के संप्रत्यय को सिद्धांत की अपेक्षा अधिक व्यावहारिक बनाती है। प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा ऐसी बनायी जाए, जिससे शिक्षण सृजनात्मकता के सकारात्मक बोध द्वारा उचित पैडागॉजिकल संबंध को सुनिश्चित किया जा सकेगा। शिक्षण के प्रति समावेशीय अभिवृत्ति, संवेगात्मक बुद्धि, आत्म प्रत्यय एवं शिक्षण सृजनात्मकता के माध्यम से शिक्षक प्रशिक्षण में चयनित छात्राध्यापकों की पेशेवर प्रत्याशा व पैडगॉजिकल बोधगम्यता विकसित हो सकेगी।

प्रस्तुत अध्ययन शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी की सृजनात्मक व रचनात्मक अभिवृत्ति को उनके विषय ज्ञान की विचारशीलता, सृजनात्मक चिन्तन व तार्किक चिन्तन द्वारा प्रशिक्षण के विभिन्न घटकों जैसे सूक्ष्म शिक्षण, अनुकरणीय शिक्षण, पाठ नियोजन तथा कक्ष–प्रबन्ध आदि अवसरों के व्यवहारिक अनुभव प्रदान करेगा। प्रशिक्षकों एवं नीति निर्माताओं द्वारा शिक्षण सृजनात्मकता के कौशल विकास के विभिन्न मॉडयूलों की भूमिका से प्रशिक्षण के विभिन्न स्तरों पर अभिविन्यास कार्यक्रम को सुस्पष्ट ढंग से लागू किया जा सकेगा।

सेवापूर्व प्रशिक्षण में प्रशिक्षुता के अंतर्गत समुचित आंकलन व फीडबैक प्रदान कर शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण योग्यताओं, दक्षताओं तथा कौशलों में सुधार किया जा सकेगा। बेहतर शिक्षण की आवश्यकताओं तथा व्यावसायिक वृद्धि के लिए उच्च प्रशिक्षण विधियों जैसे कार्यशालाओं, संगोष्ठियों, समसमायिक संवाद तथा पाठ्य सहगामी गतिविधियों व क्रियाकलापों का सशक्त अनुपालन किया जा सकेगा। प्रशिक्षण में उक्त अध्ययन आवश्यकता को आधार बनाने पर छात्राध्यापक कक्ष–शिक्षण की वास्तविक समस्याओं का सामना कर उचित समाधान प्रस्तुत करने में सक्षम हो सकेंगे। शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी शिक्षण सृजनात्मकता, आत्म प्रत्यय, समावेशीय अभिवृत्ति एवं संवेगात्मक बुद्धि के

गुणों एवं क्षमताओं की पहचान करके अपनी स्व धारण को परिमाजित करगें। प्रशिक्षण में शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों को उचित दिशा देकर यथोचित शिक्षण–सक्षमता को सुनिश्चित किया जा सकेगा।

अध्ययन के परिणामों के द्वारा प्रशासनिक संस्था एवं शिक्षक प्रशिक्षण संस्था वर्तमान के शिक्षक शिक्षा में सुधार कर सकेंगे एवं भावी शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का निर्धारण कर सकेंगे। अतः प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर भावी शिक्षकों की शिक्षण सृजनात्मकता पर आत्म प्रत्यय, समावेशीय अभिवृत्ति एवं संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव भी दृष्टिगोचर हो सकेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

ओसामा, अलमहदी एवं हैंकिन, बकलम (2019). प्री–सर्विस टीचर्स ऐटीट्यूडर्स टुवॉडर्स इनक्लूसीव एजूकेशन ड्यूरिंग देयर स्टडीज इन बहरीन टीचर्स कॉलेज. *रिसर्च आर्टिकल.* Retrieved March 5, 2020, from https://doi.org/10.1177/2158244019865772

अली, मजीद (2013). द् इफेक्ट ऑफ द् प्रोजेक्ट मेथड ऑन द् डेवलपमेंट ऑफ क्रिएटिव थिंकिंग, क्रिटिकल थिंकिंग एण्ड इमोशनल इंटेलिजेंस : ए केस स्टडी ऑफ सेकेन्डरी स्कूल स्टूडेंट्स इन द स्टेट ऑफ कुवैत. डिसर्टेशनस् एण्ड प्रोजेक्ट, 39. Retrieved February 24, 2020, from https://doi.org/10.5167/uzh-164221

एंटीनानाजस, जीस एल० एवं साल्वावर, कार्लोस (2014). इमोशनल इंटेलिजेंस एण्ड पर्सनैलिटी इन स्टूडेंट–टीचर्स. प्रासीडिया–सोशल एण्ड बिहेवियरल साइंस, 132, 492–496. Retrieved February 24, 2020, from www.sciencedirect.com

ब्रेंडा, लियोन ग्रीन (2017).टीचर्स ऐटीट्यूडर्स टुवॉडर्स इनक्लूसीव क्लासरूम. डिसर्टेशनस् एण्ड प्रोजेक्ट. Retrieved March 5, 2020, from https://scholarworks.waldenu.edu/dissertations

डीहैन, रॉर्बट एल० (2017). टीचिंग क्रिएटिविटी एण्ड इनवेंटिव प्रॉब्लम सॉल्विंग इन साइंस.सी.बी.ई. लाइफ साइंसेस एजुकेशन, 8(3), 20814–2762. Retrieved February 15, 2020, from https://doi.org/10.1187/cbe.08-12-0081.

गेयेन, रूमा एवं बेहरा, संतोष कुमार (2018). सेल्फ–कांसेप्ट ऑफ पोस्ट ग्रेजुएशन स्टूडेंट्स :एन एम्पीरिकल स्टडी. *इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एण्ड एनालिटिकल रिव्यूज,* 5(3), 2348–1269. Retrieved March 5, 2020, from http://ijrar.com

गोजन, गोकसु (2017). बीइंग क्रिएटिव फॉर टीचिंग क्रिएटिविटीः टीचर्स एण्ड इंस्ट्रक्टर्स सेल्फ एसेसमेंटर्स रिगार्डिंग क्रिएटिविटी.जर्नल ऑफ फैकल्टी ऑफ एजुकेशनल साइंसेस, 50(2), 225–253.

जैन, मंजू (2017). ए स्टडी ऑफ ऐटीट्यूड ऑफ पीपुल टीचर्स टुवॉडर्स इनक्लूसीव एजूकेशन, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ इकनोमिक एण्ड बिजनेस रिव्यू, 5(10), 2347–9671. Retrieved March 5, 2020, from www.eprawisdom.com

के, रवीन्द्र एवं गंगाय, मारापटला (2018). टीचर्स टेक्नो ऐटीट्यूड टुवॉडर्स इनक्लूसीव क्लासरूम क्लाइमेट एट स्कूल लेवल– कंपैरेटिव स्टडी बिटवीन द् यू.एस.ए. एण्ड इंडिया. इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, 6(1), 2320–2882. Retrieved March 5, 2020, from www.ijpub.org

कारपोवा, एलेना एवं मारकेट्टी, सारा बी० (2011). द् ऐफीकेसी ऑफ टीचिंग क्रिएटिविटीः एसेसमेंट ऑफ स्टूडेंट्स क्रिएटिव थिंकिंग विफोर एण्ड आफ्टर एक्सरसाइज. क्लॉथिंग एण्ड टैक्सटाइल रिसर्च जर्नल, Retrieved February 18, 2020, from https://doi.org/10.1177/0887302X11400065.

मेहरबी, फतेहमे एवं गुडराज़ी, कोरोश (2019). कंपैरिजन ऑफ एटीट्यूड टुवॉडर्स क्रिएटिविटी, एकेडमिक परफारमेंस एण्ड लर्निंग स्पीड ऑफ स्टूडेन्ट्स इन स्मार्ट एण्ड ऑर्डिनरी स्कूल्स. जर्नल ऑफ एडवांस फार्मेसी एजुकेशन एण्ड रिसर्च, 9(2), 2249–3379. Retrieved February 21, 2020,from website: www.japer.in.

मैनीन, कैरी ए० (2016). ए केस स्टडी ऑफ आर्ट्स इंटीग्रेशन प्रैक्टिसेज इन डेवलपिंग द् ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी स्किल्स ऑफ क्रिटिकल थिंकिंग, क्रिएटिविटी, कम्युनिकेशन एण्ड कोलैबोरेशन.एजुकेशन डिसर्टेशनस् एण्ड प्रोजेक्ट, 182. Retrieved October, 24, 2019, from https://digitalcommons.gardner-webb.edu/education_etd/182.

मिश्रा, श्री कृष्णा (2012). ए स्टडी ऑन सेल्फ–कांसेप्ट एण्ड इंटरेस्ट इन टीचिंग ऑफ प्री–सर्विस टीचर्स ऑफ सेकेन्डरी लेवल. इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांसमेन्ट इन रिसर्च एण्ड टेक्नोलॉजी, 1(5), 2278–7763.

उपाध्याय, प्रतीक (2014). ए केस स्टडी ऑफ रिलेशनशिप बिटवीन इमोशनल इंटेलिजेंस एण्ड एकेडमिक अचीवमेंट अमोंग स्टूडेंट–टीचर्स. डिसर्टेशनस् एण्ड प्रोजेक्ट, 29.

टिमा, सलोविता (2018). ऐटीट्यूडर्स ऑफ टीचर्स टुवॉडर्स इनक्लूसीव एजूकेशन इन फिनलैंड. *स्कैंडिनेवियाई जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च,* 0031–3831. Retrieved March 5, 2020, from https://doi.org/10.1080/00313831.2018.1541819

तुर्कुलेट, अलीना (2015). टीचर्स फॉर द् ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी. विल इमोशनल इंटेलिजेंस मेक द् डिफरेंस ?. *प्रासीडिया–सोशल एण्ड बिहेवियरल साइंस, 180,* 990–995. Retrieved February 24, 2020, from www.sciencedirect.com

टी०, अरुणा भारती एवं श्रीदेवी, पी० (2013). ए स्टडी ऑन सेल्फ–कांसेप्ट ऑफ एडोलिसेंट्स. इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ साइंस एण्ड रिसर्च, 5(10), 2319–7064. Retrieved March 5, 2020, from www.ijsr.net

विल्हेम, एंजेलिका एवं गलिना, ग्लोटोवा (2014). टीचर्स सेल्फ–कांसेप्ट एण्ड सेल्फ–एस्टीम इन पेडागोजीकल कम्युनिकेशन. *प्रासीडिया–सोशल एण्ड बिहेवियरल साइंस, 132,* 509–514. Retrieved March 5, 2020, from www.sciencedirect.com

गुप्ता, एस०पी० एवं गुप्ता, एल० (2018). *शिक्षा मनोविज्ञान.* (पंचम संस्करण). इलाहबाद, शारदा पुस्तक भवन।

कौल, लोकेश (2014). *शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली.* (तृतीय संस्करण). नोएडा, विकास पब्लिशिंग हाऊस।

कोठारी, सी०आर० (2004). *रिसर्च मेथोडोलॉजी मैथर्ड एण्ड टेक्निक्स.* (सेकंड रिवाइज्ड एडिशन). नई दिल्ली, न्यू एज इन्टरनेशनल लिमिटेड (पी) पब्लिशर।

मंगल, एस०के० (2017). शिक्षा मनोविज्ञान (चतुर्थ संस्करण). आगरा, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर।

सिंह, अरुण कुमार (2010). शिक्षा मनोविज्ञान (तृतीय संस्करण). नई दिल्ली, भारती भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स।